

डॉक्टर बाबासाहेब अम्बेडकर और आरएसएस



एक महान नेता और संविधान के निर्माता डॉक्टर बाबासाहेब अम्बेडकर को उनकी ऊंचाई और महान ज्ञान को समझने के लिए उचित परिप्रेक्ष्य के साथ अध्ययन किया जाना चाहिए। कई मौकों पर जनता को गुमराह करने के लिए कई मीडिया आउटलेट्स और राजनीतिक दलों ने उन्हें गलत तरीके से उद्धृत किया है।

भले ही उनका जीवन बचपन से ही संघर्षमय रहा हो, लेकिन समाज और देश के लिए उनके पास एक स्पष्ट दृष्टि थी। हमें तहे दिल से स्वीकार करना चाहिए कि काफी हद तक सामाजिक असमानताएं थीं, भले ही इसके कारणों को नकली आर्यन आक्रमण सिद्धांत, मुगलों और अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो की नीति को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, लेकिन हम इन युक्तियों द्वारा दुर्व्यवहार के शिकार हमारे अपने भाइयों और बहनो की जिम्मेदारी से बच नहीं सकते हैं। इसलिए डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर की असमानता के खिलाफ लड़ाई जायज थी।

सामाजिक असमानता किसी भी राष्ट्र के लिए अभिशाप है ; इसने भारत को सामाजिक और आर्थिक रूप से नष्ट कर दिया है। समाज को सामाजिक समरसता से जोड़ने के लिए हर संगठन और राजनीतिक दल को डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के बताए रास्ते पर चलना चाहिए। “राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ” इस क्षेत्र में कार्यरत संगठनों में से एक है। संघ न केवल सामाजिक समरसता में विश्वास करता है, बल्कि हम इसे लाखों स्वयंसेवकों के विशाल संघ परिवार में धरातल पर देख सकते हैं।

आरएसएस ने दलितों और अन्य पिछड़े वर्गों को मंदिर के महायाजक (पारंपरिक रूप से जाति ब्राह्मणों के लिए आरक्षित और निचली जातियों से वंचित) बनने के लिए शिक्षा की वकालत की और करवाया भी। उन्होंने तर्क दिया कि जाति व्यवस्था की सामाजिक विभाजन हिंदू मूल्यों और परंपराओं के पालन की कमी के कारण जिम्मेदार है, और इस तरह से हर जाति तक पहुंचने से समस्या का समाधान होगा। आरएसएस ने दलितों को मंदिरों में प्रवेश करने से रोकने के लिए उच्च जाति के हिंदुओं की भी निंदा की और दावा किया कि “भगवान भी मंदिर को छोड़ देंगे जहां दलित प्रवेश नहीं कर सकते।”

1939 में डॉक्टर बाबासाहेब अम्बेडकर सुबह संघ शिक्षा की कक्षा में आए और सभी कार्यक्रमों को देखा और दोपहर में उन्होंने डॉक्टर हेडगेवारजी और अन्य स्वयंसेवकों के साथ दोपहर का भोजन किया। उसके बाद डॉक्टर हेडगेवार जी के अनुरोध पर डॉक्टर बाबासाहेब जी ने एक घंटे तक ‘दलितों और दलितों के उत्थान’ की बात की। डॉ. अम्बेडकर ने स्वयंसेवकों के साथ चर्चा की और जाँच की कि शाखा

में कोई भेदभाव नहीं है। “यह पहली बार है जब मैं संघ के स्वयंसेवकों के शिविर का दौरा कर रहा हूँ। मैं सर्वर्णियों और हरिजन के बीच पूर्ण समानता पाकर खुश हूँ, बिना किसी को इस तरह के अंतर के बारे में पता नहीं है।”

आरएसएस के तीसरे सरसंघचालक श्री बालासाहेब देवरस जी ने सामाजिक समरसता पर अपने भाषण में कहा : “हमारे इतिहास से पता चलता है कि मुट्ठी भर मुसलमान और उससे भी कम अंग्रेज हम पर शासन कर सकते थे और हमारे कई भाइयों को जबरदस्ती धर्मांतरित कर सकते थे। उन्होंने ‘ब्राह्मण और गैर-ब्राह्मण’ और ‘सवर्ण और अस्पृश्य’ जैसे विवाद भी पैदा किए।” हम केवल विदेशियों को दोष नहीं दे सकते और इस संबंध में खुद को दोषमुक्त नहीं कर सकते। इस तथ्य पर शोक करने की क्या बात है कि विदेशियों के साथ हमारे संपर्क और उनकी विभाजनकारी साजिशों के परिणामस्वरूप हमारी एकता बिखर गई थी ?

हमारे और उनके बीच कभी बर्लिन की दीवार नहीं हो सकती थी। जो दूसरे लोगों के संपर्कों और विचारों से डरते हैं, वे ही अपने चारों ओर दीवार खड़ी करते हैं। किसी भी प्रणाली की महानता तभी प्रदर्शित होती है जब वह दूसरों के संपर्क में रहते हुए भी अपना सिर ऊंचा रख सकती है। जब कोई प्रणाली अपने आप को एक अभेद्य खोल में घेर लेती है, तो यह केवल अपनी हीनता की घोषणा कर रही होती है। अपनी कमियों के लिए दूसरों को दोष देने के बजाय हमें अपने भीतर झांक कर देखना चाहिए कि हमारी कौन सी खामियों ने विदेशियों को हमारा फायदा उठाने दिया।

आरएसएस के संस्थापक डॉ. हेडगेवार जी का इस संबंध में एक अनूठा दृष्टिकोण था। जब भी यह विषय आता, तो वे कहते, “हम अपनी दुर्दशा के लिए मुसलमानों और यूरोपीय लोगों को दोष देकर अपनी जिम्मेदारी से खुद को मुक्त नहीं कर सकते। हमें अपनी खामियों की तलाश करनी चाहिए।” हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि हमारे बीच सामाजिक असमानता ने हमारे पतन में योगदान दिया है। जाति और उप-जाति प्रतिद्वंद्विता, साथ ही अस्पृश्यता जैसी विखंडनीय प्रवृत्तियाँ, सभी सामाजिक असमानता की अभिव्यक्तियाँ रही हैं।

हिंदू संगठनवादियों के लिए यह एक नाजुक और कठिन मुद्दा है क्योंकि हमें अपने धर्म और संस्कृति पर बेहद गर्व है। सच है, ऐसी बहुत सी बातें हैं जिनके बारे में हमें उचित ही गर्व हो सकता है। इस भूमि के दर्शन और मूल्यों को दुनिया भर के विचारकों ने मानवता की शांति और प्रगति में एक अमूल्य योगदान के रूप में सराहा है। लंबे समय से चले आ रहे हमलों और ऐतिहासिक और राजनीतिक उथल-पुथल के सामने, ये जीवन मूल्य समय की कसौटी पर खरे उतरे हैं। हम सभी स्वाभाविक रूप से यह मानने के इच्छुक हैं कि इन शाश्वत जीवन-सिद्धांतों को संरक्षित किया जाना चाहिए।

हालाँकि, इस गौरव को संजोते हुए भी, यह स्पष्ट है कि यह विश्वास करना एक गलती होगी कि जो कुछ भी पुराना है वह सोना है। “श्री बालासाहेब देवरस जी ने कहा।

उन्होंने आगे वर्ण व्यवस्था के बारे में जोड़ा ; किसी भी प्रणाली में दोष अपरिहार्य हैं। यह सर्वविदित है कि साम्यवाद ने सभी प्रकार की असमानताओं को समाप्त करने की कोशिश की, विशेष रूप से ‘वर्गों’ के बीच। हालाँकि, अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ‘द न्यू क्लास’ में, मिलोवन जिलास (यूगोस्लाविया के एक शीर्ष

कम्युनिस्ट नेता) ने लिखा है कि सभी कम्युनिस्ट देशों में एक नया वर्ग उभरा है। कम्युनिस्ट व्यवस्था की स्थापना के 50 साल से भी कम समय के बारे में उसे यह कहना पड़ा- एक ऐसी व्यवस्था जो सभी वर्गों को खत्म करने के लिए पैदा हुई थी। मानव स्वभाव ऐसा ही है। किसी भी व्यवस्था में निहित स्वार्थों का उदय होता है। वर्ण व्यवस्था इस मानवीय कमजोरी से अछूती नहीं थी, और परिणामस्वरूप, यह विकृत और ध्वस्त हो गई। लेकिन कोई भी यह दावा नहीं कर सकता है कि जब उन्होंने इसे तैयार किया तो सिस्टम के रचनाकारों के ऐसे नापाक इरादे थे।

शूद्रोपी शीलसम्पन्नो गुणवान् ब्राह्मणो भावेते
ब्रह्मनोपी क्रियाहीनः शूद्रत प्रत्यावरो भावेत।

एक शूद्र अपने नेक आचरण से ब्राह्मण बन सकता है, और एक ब्राह्मण उस शुद्धता के बिना शूद्र बन सकता है। वैकल्पिक रूप से,
जत्या ब्राह्मणन इति शेष ना।

केवल जन्म से ही कोई ब्राह्मण नहीं हो जाता। ऋष्यशृंग, विश्वामित्र और अगस्त्य जैसे महान ऋषि ऐसे लोगों के शानदार उदाहरण हैं, जो ब्राह्मण के रूप में पैदा न होने के बावजूद तपस्या, पुण्य और प्राप्ति के माध्यम से ब्राह्मण बने। पुराणों के अनुसार, ऐतरेय ब्राह्मण और बाद में एक द्विइया के लेखक महिदास, एक शूद्र महिला के पुत्र थे। जाबाला को उनके गुरु द्वारा उपनयन समारोह के माध्यम से ब्राह्मण समूह में दीक्षा दी गई थी, इस तथ्य के बावजूद कि उनके कोई पिता नहीं थे। ये चीजें केवल इसलिए संभव थीं क्योंकि उन्होंने विरासत में मिली क्षमताओं की सीमाओं को पहचाना और व्यवस्था को लचीला बनाया। नतीजतन, प्रणाली सदियों तक चल सकती है।

आरएसएस जैसे संगठनों की विनाशकारी आलोचना और नफरत फैलाने वालों को आरएसएस के स्वयंसेवकों और संघ के “सामाजिक समरसता” विभाग द्वारा संचालित “वनवासी कल्याण आश्रम” परियोजनाओं में भाग लेना चाहिए।

महान चरित्र और धरती के सपूत डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर को याद करने और उनका सम्मान करने का समय आ गया है।

इस अविश्वसनीय दूरदर्शी को प्रणाम।

(लेखक की कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और वे राष्ट्रीय व सामाजिक विषयों पर लिखते हैं)

संपर्क

7875212161